सहजयोग आज का महायोग

सहजयोग : पंचतत्त्वों के सूक्ष्म जागरण से व्यक्तित्व का दिव्य रूपांतरण

सहजयोग में श्री माताजी की अनुकम्पा से कुंडलिनी जागरण द्वारा आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के पश्चात जिन पंचतत्त्वों से हम बने हैं, चैतन्य लहरियाँ उन तत्त्वों के सूक्ष्म तत्त्व से हमें जोड़ने लगती हैं। यह बड़ी सूक्ष्म बात है, इसकी सूक्ष्मता हमें समझनी चाहिए।

श्री माताजी के अनुसार,

- प्रकाश अभिव्यक्त होने वाला प्रथम तत्त्व है और उसका सूक्ष्म तत्त्व है तेज, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के पश्चात व्यक्ति (गहन सहजयोगी) का मुखमण्डल तेजोमय हो उठता है।
- स्थूल वायु का सूक्ष्म तत्त्व आपको प्राप्त होने वाली शीतल चैतन्य लहरियाँ है। आत्म साक्षात्कार के बाद आप केवल लहरियाँ ही नहीं प्राप्त करते, शीतलता का भी अनुभव करते हैं।
- जल तत्त्व सूक्ष्म रूप में जब अभिव्यक्ति होता है तो वह सहजयोगी की कठोर त्वचा को कोमल करता है, उनके अंदर का जल ही उनके चेहरे की त्वचा को चमक और पोषण प्रदान करता है। इसी के साथ आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति अत्यन्त मृदु और विनम्र हो जाते हैं।
- आप में अग्नि भी है परन्तु यह अत्यन्त शान्त अग्नि है। यह किसी अन्य को नहीं जलाती, आपके अंदर बुराइयों को और आपके माध्यम से अन्य लोगों की बुरारियों को आपकी यह अग्नि जला देती है। यदि आप पूर्णतः विकसित सहजयोगी हैं तो अग्नि आपको कभी नहीं जलाएगी क्योंकि अग्नि तत्त्व का सार आपको प्राप्त हो जाता है।
- पृथ्वी माँ है। पृथ्वी की बहुत सी सूक्ष्मताएं हममें आ जाती हैं। इनमें से एक गुरुत्वाकर्षण है । गुरुत्वाकर्षण की अभिव्यक्ति से व्यक्ति अत्यन्त आकर्षक हो जाता है। पृथ्वी माँ की तरह हम भी अत्यन्त सहनशील और धैर्यवान बनने लगते हैं।

आप मुझे जानते नहीं .....

अपने देश में रहने वाले अक्सर अपनी टौर में रहते हैं । टशन दिखाना अब तो हमारे चरित्र की विशेषता है । ये सब बढ़ता ही जा रहा है । कभी पार्किंग के लिए मारा -मारी तो कभी कुत्ते की पोटी इधर -उधर पड़ी हो तो उसके लिए मार -पिटाई ,तो कभी अपने फ्लेट में आनधिकृत निर्माण कार्य कर अपने पड़ोसी को तंग करना ऐसे अनेकों -अनेक कारण पैदा कर फिर उस पर धौंस देना की आप मुझे जानते नहीं की मैं किन -किन को जानता हूँ । कभी -कभी बहस इतनी बढ़ जाती है कि मर्डर भी कर दिया जाता है । अपनी कॉलोनी में रहने वाले सभी लोग सरकारी बुयरोक्रेसी के महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं । इनमें से कुछ शालिन होते हैं तो कुछ छिछोरे । हमारी कालोनी में एक जिसु जी रहते हैं । जो कोलोनी के पुराने निवासियों में से एक हैं । जिसु जी अपनी कॉलोनी में खुद को स्वयंभू देवता समझते हैं । कॉलोनी में कहीं कोई समस्या हो अपनी सलाह देने लगते हैं । चाहे उनसे कोई सलाह मांगे या न मांगे जिसु जी को सलाह देनी ही है । कॉलोनी और मोहल्ले में कोई आ जाए तो बस दो इडली लेकर उसके घर पहुँच जाएंगे और स्वर इतना मीठा की कोयल भी शरमा जाये और धूर्त इतने कि लोमड़ी भी उनके आगे पानी भरती नज़र आए । जिसु जी को लगता है कि उनको सब हाथ जोड़कर नमस्कार करें । अरे भाई कौन समझाये उनको की इज्जत कमाई जाती है न कि जबर्दस्ती करवाई जाती है । कोई आपके कर्ज के बोझ तले थोड़ा ही दबा हुआ जो आपको डर के मारे हाथ जोड़े और आपको शीश नवाए । जिसु जी का हाल ये कि दिल है कि मानता नहीं । दिल के हाथों मजबूर होकर आए दिन किसी न किसी से उलझते नज़र आ जाते हैं और फिर मुंह की खाते हैं ।

जिसु अंकल पूरी कॉलोनी के लोगों पर प्रभाव जमाने की कोशिश करते ही रहते हैं । लोगों को प्रभावित करने के लिए ये कुछ भी कर सकते हैं और किसी भी हद तक जा सकते हैं । जिसु जी कॉलोनी में किसी के घर दो इडली ,पूरी सब्जी, डोसा भेज देंगे और बदले में उसे अपने इस अहसान के तले दबाने की कोशिश करते हैं । जिसु ये सब भी एक रणनीति के तहत करते हैं । अपनी नौकरानी का काम बढ़ाते है और इसी बहाने अपनी बची -खुची सब्जियों को ठिकाने भी लगा लेते हैं । जिसु जी का व्यर्थ माल अर्थवान हो जाता है और जिसु जी समर्थ ।

जिसु जी अपने को इलिट समझते हैं और उनको अन्य लोग अनपढ़ और गंवार लगते हैं । वो सभी को अपने से कम समझते हैं । मजेदार बात है की ये अपने को इतना इलिट समझते हैं कि इन्हें पता ही नहीं चलता कि ये कब लोगों के दिल -दिमाग से डिलीट हो चुके हैं । अपने को फनैखान समझने की बीमारी लाइलाज होती है । इसका इलाज तो सिर्फ मनोवैज्ञानिक ही कर सकते हैं । जिसु जी को अपनी प्रॉपर्टी ,गाड़ियों और पढ़ाई -लिखाई पर बहुत गुमान है । जिसु जी एक दिन मुझ पर धौंस जमाने लगे कि आपने जो पेंट करवाया उसका रंग मुझे पसंद नहीं है आप उसे बदलो । जब उनकी ये बकवास सुनते -सुनते इंतिहा हो गई तो बड़े ही मुलायम लहजे में मैंने कहा 'मुझे आपका पहनावा अच्छा नहीं लगता । अब आप बताओं मैं क्या करूँ ' इतना सुनते वो बिदक गए और गुस्से में बोलने लगे कि तुम मुझे नहीं जानते । मैं कौन हूँ और किन -किन को जनता हूँ ? ' मैंने कहा 'न तो आप भगवान न ही कोई प्रसिद्ध व्यक्ति । जैसे मैं भारत की एक नागरिक हूँ वैसे ही आप भी एक नागरिक हो । आप पर कोई सुरखाब के पंख नहीं लगे हुए । ' इतना सुनते ही जिसु जी फिर बोलें 'आप मुझे जानते नहीं कि में क्या हूँ ।' इनका ये डायलाग अभी दिमाग में घूम ही रहा था की टीवी में खबर सुनी कि एक महिला जो केदारनाथ की यात्रा पर थी और वहाँ के लोडर्स को धमका कर कह रही थी 'तुम मुझे जानते नहीं हो मैं किन -किन को जानती हूँ । तुम्हें एक सेकंड में ठीक करवा दूँगी । ' आजकल तुम मुझे जानते नहीं हो का सिंड्रोम सिर चढ़ कर बोलता है । अगर पुलिस किसी की गलती पर चालान काटे तो उनको धौंस देने लगेंगे कि आप मुझे जानते नहीं मेरे चाचा -मामा -फूफा होम मिनिस्ट्री में बड़े अधिकारी हैं । अरे भाई जब कानून का उल्लंघन किया है तो दंड तो भुगतना पड़ेगा । मगर ये तो आज हर किसी की जबान पर चढ़ा रहता है कि आप मुझे जानते नहीं । अरे भई किसी को क्या ही करना है आप को जानकर । आप कोई राजा तो हो नहीं जो आप को कोई जानेगा या जानना चाहेगा । अब लोकतन्त्र में वैसे ही सब राजा हैं । तो फिर धौंस पट्टी क्यों ?अब तो आम जनता भी उन्हीं राजनीतिक दलों को जानती और मानती है । जिनसे उन्हें सरकारी योजनाओं के तहत योजनाओं लाभ मिले ।

अरे भाई क्या ही फर्क पड़ता है ? आप को कोई जानता है कि नहीं । अरे जब ईश्वर भी अवतरण में आ जाए तो आदमी भी उन्हें पहचान नहीं पाए । जब उन्होने चमत्कार के रूप में अपनी लीलायें इन्सानों को दिखाई तो फिर सब ने उन्हें प्रणाम किया । ये जिसु जी जैसा आदमी भी क्या चीज है ।अभी तो कोढ़ पर खाज की तरह एक और भद्र महिला कालोनी में आ गई हैं और जिसु जी की तर्ज पर भौकाल मचाए हुए है । ये लोग अब महामारी की तरह फैलते जा रहे हैं । ये सफेदपोश बदमाश न जाने कब समाप्त होंगे । इनके लिए भी कोई ठोस कानून बनना चाहिए । ताकि लोग के जुबान पर ये बात सोच -समझ कर आए कि आप मुझे जानते नहीं कि मैं किन -किन को जानता हूँ । जिसु जी अपने इस डायलाग को इस तरह से कहते है :

महफिल में जो उठाई हैं उँगलियाँ मेरी तरफ ,
उन सब से यही कहना है :
'तुम मुझे जानते नहीं हो'।

ललिता जोशी
मुनिरका एंक्लेव ,दिल्ली – 110067

'चींटी की अर्थी' एक ऐसी किताब जिसे सिर्फ पढ़ा नहीं, महसूस किया जाता है

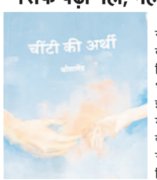

तकरीबन पंद्रह दिन हो गए मुझे यह पुस्तक प्राप्त हुए, और शायद यही वजह है कि मैं इसकी समीक्षा अब लिख पा रही हूँ। चाहती तो दो दिन में भी लिख सकती थी, लेकिन तब मैं इसे सिर्फ एक किताब की तरह पढ़ती। मैं उन पाठकों में से हूँ जो कहानियों को केवल पढ़ते नहीं, उन्हें अपने भीतर जीते हैं । और 'चींटी की अर्थी' मेरे लिए वैसी ही किताब बन गई।किताब की भूमिका की यह पंक्ति जैसे पूरी कहानी का सार अपने भीतर समेटे हुए है... 'असल जिंदगी परीलोक की कहानी नहीं है। यह तो त्रासदियों का दस्तावेज़ है, असल जिंदगी युद्धों से गुजरती है। 'कितनी सच्ची बात है। जीवन वास्तव में ऐसा ही है। बाहर से सामान्य दिखता हुआ, भीतर अनगिनत संघर्षों और अधूरे युद्धों से भरा हुआ। लेखक कौशलेंद्र जी ने समाज की उन्हीं परतों को उघाड़ने का साहस किया है जिन पर अक्सर लोग चुप्पी डाल देना बेहतर समझते हैं।प्रिया और विनोद की कहानी केवल प्रेम कहानी नहीं है, यह उस समाज का आईना है जहाँ प्रेम से ज्यादा लोगों को अपनी खोखली इज़्ज़त प्यारी होती है। जहाँ बिना सच्चाई जाने चरित्र तय कर दिए जाते हैं, जहाँ लड़कियों की इच्छाओं को परिवार की 'मर्यादा' के नाम पर कैद कर दिया जाता है, और जहाँ प्रेम करने वाले अक्सर दोषी बना दिए जाते हैं।

मेरी सबसे पसंदीदा पंक्ति रही...

'प्रेम कम या ज्यादा नहीं होता, प्रेम बस होता है। वह संघर्ष में निखरता है, वियोग में गहरा होता है और अपनी संपूर्णता में समर्पण का भाव लिए होता है। 'शायद वास्तविक प्रेम यही है...जो संघर्ष में और निखरता है, वियोग में और गहरा हो जाता है, और समय बीत जाने के बाद भी भीतर जीवित रहता है।पूरी किताब पढ़ते हुए ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं किसी कहानी को नहीं, अपने आसपास के समाज को देख रही हूँ। हमारे गली-मोहल्लों में आज भी न जाने कितनी प्रियाएँ हैं जिन्हें फैसले लेने का अधिकार नहीं, और कितने विनोद हैं जो बिना किसी अपराध के समाज की संकीर्ण सोच की बलि चढ़ जाते हैं।अगर आप ऐसी किताब पढ़ना चाहते हैं जो प्रेम, समाज, पीड़ा और सच्चाई को बेहद ईमानदारी से सामने रखे, तो 'चींटी की अर्थी' एक बार अवश्य पढ़िए। यह केवल एक उपन्यास नहीं, हमारे समाज के कड़वे सच का दस्तावेज़ है। ??

सोनिका शुक्ला

नेताओं के लिए चाणक्य नीतियाँ कितनी आवश्यक

आज के नेताओं के चयन के लिए चाणक्य नीति उतनी ही आवश्यक है जितनी देश के सैनिकों के लिए कठोर प्रशिक्षण और एक किसान के द्वारा खेतों में किया गया कठिन परिश्रम।

नेताओं के लिए चाणक्य नीति की डिग्री अनिवार्य कर देना चाहिए। क्योंकि चाणक्य नीतियों का ज्ञान आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय बनकर पुरी दुनिया के समक्ष खड़ा है।

चाणक्य नीति के अनुसार एक अच्छे नेता का पहला गुण ये होना चाहिए कि वह राष्ट्रहित और जनहित के बारे में सोच कर ही कार्य करें। वह राष्ट्रहित और जनहित को प्राथमिकता दें। जबकि आज के नेताओं के लिए स्वहित सर्वोपरि है। कुर्सी सर्वोपरि है। कुर्सी कैसे पाए इसी जोड़ तोड़ में लगे रहते हैं। कुर्सी के लिए ईमान धरम सब दांव पर लगा सकते है।

कहां जाता है कि नेताओं का सलाहकार योग्य होना चाहिए। परंतु यहां तो सलाहकार की जरूरत ही नहीं है। हम अपने मन के राजा हैं अर्थात अंधेर नगरी चौपट राजा।

नेताओं के आजू बाजू चमचों की फौज जुटी रहती है। हां मैं हां में मिलाकर अपना उल्लू सीधा करना इनका मुख्य काम है। सुबह शाम नेताओं के आस पास रहना बात बात पर झूठी वाहवाही करना ही इनकी दिनचर्या है । ऐसे लोगों से घिरे नेता जी फूले नहीं समाते हैं। और चमचों की भी पांचों उंगलियां घी में रहती हैं।

चाणक्य नीति में राजनीति के लिए गोपनीयता और रणनीति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लेकिन गोपनीयता और रणनीति की तो आजकल धज्जियां उड़ाई जा रही है।इसका ताजा उदाहरण इरान इजरायल और अमेरिका है । एक सिरफिरे नेता तो रोज नया एलान करते हैं। हमारे देश में भी रोज नयी घोषणाएं होती है रोज उद्घाटन समारोह आयोजित होते है और ठंडे बस्ते में चले जाते हैं।

एक अच्छे नेता की भाषा शैली उत्कृष्ट कोटि की होनी चाहिए। इसके विपरित आज के समय में भाषा की अभद्रता मर्यादा की सारी सीमाएं लांघ गयी है। कबीरदास जी ने कहा थाङ्क

वाणी एक अमोल है जो कोई बोले जानी ,

हिये तराजू तोली के तब मुख बाहर आनी।

लेकिन यहां तो वक्तव्यों पर कोई लगाम ही नहीं है। मिट्टी में मिला देंगे या कब्र खुदवा देंगे। हमारे इधर आना देख लेंगे। ऐसे भडकिले अभद्र भाषणों से जनता को गुमराह करने का प्रयास। नेताओं की जबान तो रोज फिसलती रहती हैं। एक समय था जब नेता एक दूसरे पर संयमित और सुंदर भाषा का प्रयोग करते हुए मजाकिया अंदाज में कटाक्ष करते थे।

चाणक्य नीति के अनुसार नेताओं में यह गुण होना चाहिए कि अपनी रणनीति को समय से पहले उजागर ना करें। पर यहां तो हर नेता एक से एक बढ़ चढ़ कर अपना ढिंढोरा पीटने में लगे रहते हैं।

वे कल क्या करने वाले हैं वह अखबार न्यूज टी वी चैनलों पर पहले से ही आ जाता है।और

टी वी चैनलों पर तो चीख चीखकर नमक मिर्च लगाकर समाचार परोसते हैं। आज की बड़ी खबर

सबसे पहले हमारे चैनल पर।

चाणक्य कहते हैं कि नेताओं में पारदर्शिता हो । और भ्रष्टाचार से दूरी बनाए रखें। पर यहां तो सब गड़ बढ़ घोटाला है। भ्रष्टाचार में तो चींटी से लेकर हाथी तक डूबा हुआ है। भ्रष्टाचार तो वह दीमक है जो पता भी नहीं चलता और देश को खोखला कर देता है। भ्रष्टाचार वह खटमल है जो खूद की ही खाट पर इंसान का खून चूस कर अधमरा कर देता है। भ्रष्टाचारी का कोई रंग नहीं होता कोई विशेषता नहीं होती उसे पहचाना नहीं जा सकता।

चाणक्य कहते हैं कि नेताओं में कठोर निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। अर्थात राज्यहित में निर्णय लेने की । लेकिन नेता गण तो स्वहित परिवार हित को प्राथमिकता देते है। चाहे जो हो जाये पर सही निर्णय लेकर लोकप्रियता को होम करने की अपेक्षा स्वहित के लिए मैं चाहे ये करू मैं चाहे वो करू मेरी मर्जी।

अंत में चाणक्य नीति का मूल संदेश यही है कि एक सच्चा नेता वहीं है। जो बुद्धिमत्ता नैतिकता का संतुलन बनाए रखें। आज के संदर्भ में नेताओं को उन सिद्धांतों को अपनाना चाहिए। जिनमें बुद्धिमत्ता, नैतिकता, रणनीति का संतुलन हो। सच्चा नेता प्रभावी , पारदर्शी और जनता के प्रति जागरूक और जवाबदेही हो। जय हो। जय भारत।

माधुरी निगम ' मधुबन '
विद्यालय संचालिका,वामा सदस्या इंदौर

लू से बढ़ती नीतिगत चुनौती

महोदय,

इस समय देश में लगातार बढ़ती भीषण गर्मी मौसमी परेशानी के साथ ही गंभीर आर्थिक और मानवीय संकट बन चुकी है। इसका सबसे अधिक असर असंगठित क्षेत्र के मजदूरों, खेतिहर श्रमिकों और रेहड़ी-पटरी वालों पर पड़ रहा है, जिन्हें तपती दोपहर में भी काम करना पड़ता है। महंगाई और ईंधन की बढ़ती कीमतों ने उनकी कठिनाइयों को और बढ़ा दिया है। अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भी चेताया है कि लू के कारण भारत को भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। सरकार की एडवाइजरी और अस्थायी उपाय पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए जरूरी है कि लू को 'आपदा प्रबंधन अधिनियम' के तहत अधिसूचित आपदा घोषित किया जाए और श्रमिकों के लिए सुरक्षित कार्य परिस्थितियां सुनिश्चित की जाएं। समय रहते ठोस नीति नहीं बनी, तो भविष्य में संकट और गहरा सकता है।

अमृतलाल मारू 'रवि' इन्दौर

लेखक का चश्मा

साहित्य की मंडी का एक नियम है, लिखने से ज्यादा जरूरी है 'दिखना'।और व्यक्तित्व से लेखक दिखने के लिए , 'लेखक का चश्मा' होना ही चाहिए।आम आदमी चश्मा तब लगाता है जब उसकी नजर कमजोर होती है, लेकिन लेखक चश्मा तब लगाता है जब उसे समाज को यह जताना होता है कि बेटा, जो तुम्हें नहीं दिख रहा, वह मुझे साफ दिख रहा है! लेखक का चश्मा बौद्धिकता का लाइसेंस है। चश्मा चढ़ाते ही आप 'युगदृष्टा' बन जाते हैं।बाजार में हर विचारधारा के चश्मे नंबर के हिसाब से नहीं, 'सहूलियत' के हिसाब से मिलते हैं । मार्क्सवादी चश्मा लगाइए, तो दुनिया के सारे शोषित सिर्फ आपके प्रकाशक की जेब में और जेएनयू के देर रात चलते ढाबों पर नजर आएंगे।यह चश्मा इन दिनों आउट ऑफ फैशन है।दक्षिणपंथी चश्मा पहनते ही अतीत का गौरव इतना चौंधियाने लगता है कि वर्तमान के गड्ढे में गिरो, तो भी लगता है कि मोक्ष मिल गया है।यह चश्मा इन दिनों इतना पॉपुलर हो रहा है कि बिना चश्मा लगाए भी , सारे कलमकार इसे ही अपने कान नाक पर धारण किए दिख रहे हैं। वार्ड–मारू चश्मा सबसे चमत्कारी है।इसे पहनते ही निर्णायक मंडल के घर का रास्ता और उनकी पसंद की मदिरा का ब्रांड एकदम साफ दिखने लगता है।'अंधा बांटे रेवड़ी, फिर–फिर अपनों को दे', सही चश्मा होना चाहिए , अवॉर्ड की कृपा आप पर भी बरस सकती है ।कई स्वनामधन्य लेखक 'बहती गंगा में हाथ धोने' के लिए खास किस्म का गिरगिटी चश्मा पहनते हैं।इस चश्मे की करामात देखिए कि सत्ता की हर लाठी उन्हें 'अनुशासन का डंडा' दिखती है और जनता की चीख 'मात्र प्रलाप' प्रतीत होती है। 'सावन के अंधे को सब हरा ही हरा दिखता है', बशर्ते सावन सरकारी अनुदान का हो।चश्मे की माया ही थी कि शरद जी को प्रतिदिन कुछ खास नजर आ ही जाता था।परसाई जी चश्मा साफ करते ही आउट ऑफ बॉक्स सोचने लगते थे।और रवींद्र नाथ त्यागी का नजरिया व्यंग्य का नजारा बन गया है।चश्मा गलत हो तो सब गड़बड़ और गड्मगड हो जाता है , जिस पीढ़ी और जिन कंधों पर दो हजार सैंतालीस का भार डालने की तैयारी होनी चाहिए वे भी आंखों पर काली रेशमी पट्टी बंधी हो तो काकरोच से दिखने लगते हैं।साहित्य की आवश्यकता यह है कि लेखक आईना देखने के बजाय खुद का चश्मा साफ रखें ।साहित्य का उद्देश्य दूसरों की आंखों में धूल झोंकना नहीं, समाज को सच दिखाना है ।चश्मा उतारकर आंखें खोलिए, और सच को सच लिखिए , तय है वह शाश्वत साहित्य बनेगा

विवेक रंजन श्रीवास्तव

भारत हमारा अच्छा दोस्त–ट्रम्प ?

28 फरवरी 2026 (ढाई महीने से भी अधिक समय) से चल रहे युद्ध के बाद ईरान का मामला सुलझने की और अधिक उलझता जा रहा है. दूसरे देश यहाँ तक की मित्र देश भी अमेरिका से अंदरखाने में खफा हो रहे हैं. भारत पर भी टेरिफ टेरर थोपा गया. ट्रम्प की चीन यात्रा के दौरान भी कोई विशेष नतीजा नहीं निकला।उलटे रूस के राष्ट्रपति भी चीन में मीटिंग कर आये. उनके अपने घर में ही ट्रम्प का विरोध भी आरम्भ हो गया है और उनके विपक्षी सांसद ही नहीं स्वयं की पार्टी के सदस्य भी ट्रम्प की नीति का विरोध करने लगे हैं. अब जब सब तरफ़ से ट्रम्प को टका सा जवाब मिलना शुरू हुआ तो उन्हें भारत के पीएम मोदी की याद आई और कहने लगे भारत हमारा अच्छा दोस्त है. मोदी हमसे हमेशा अच्छी बात करते रहे हैं. हमारी दोस्ती गहरी है. कहीं इसमें भी कोई राज तो नहीं छुपा है ? जहाँ विश्वस्तर पर अमेरिका की गिरती छबि को भारत का साथ लेकर सुधारने की एक कोशिश की जा रही हो. क्योंकि कि ये भी एक विश्वस्तर की अमरीकी राजनीति भी हो सकती है. इस बारे में भी हमें सोचना है.चाहिए........

शकुंतला महेश नेनावा, , इंदौर

लोकोक्तियाँ

लोकोक्तियाँ केवल शब्दों का समूह नहीं होतीं, वे समाज के लंबे अनुभवों, जीवन की परिस्थितियों और जनमानस की समझ का सार होती हैं। सामान्य रूप से कहा जाए तो लोकोक्ति वह कथन है, जो लोगों द्वारा अपने अनुभवों के आधार पर कहा जाता है और धीरे-धीरे समाज में इतना प्रचलित हो जाता है कि वह लोकजीवन का हिस्सा बन जाता है। इन कथनों में गहराई इसलिए होती है, क्योंकि वे केवल कल्पना से नहीं, बल्कि जीवन के वास्तविक अनुभवों से उत्पन्न होते हैं। हम अपने दैनिक जीवन और बोलचाल में अनेक लोकोक्तियों का प्रयोग करते हैं। कई बार कम शब्दों में बड़ी बात कहने का कार्य यही लोकोक्तियाँ करती हैं। उदाहरण के लिए 'दिन भर चले ढाई कोस' यह संकेत देती है कि अत्यधिक प्रयास के बाद भी अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुआ। इसी प्रकार 'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद' ऐसी स्थिति को दर्शाती है जहाँ किसी व्यक्ति को कोई मूल्यवान वस्तु या अवसर तो मिल जाता है, पर वह उसकी वास्तविक महत्ता को समझ नहीं पाता। 'सैंया भये कोतवाल, तो डर काहे का' जैसी लोकोक्ति शक्ति और संरक्षण की मानसिकता को व्यक्त करती है, जहाँ किसी प्रभावशाली व्यक्ति का साथ मिलने पर व्यक्ति स्वयं को निडर समझने लगता है। वहीं 'यथा राजा तथा प्रजा' समाज के उस स्वभाव को दर्शाती है जिसमें सामान्य लोग अपने नेतृत्व और प्रभावशाली व्यक्तियों के आचरण का अनुसरण करने लगते हैं। इसी प्रकार 'धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का' अत्यधिक चतुराई या अस्थिरता के कारण दोनों ओर से नुकसान उठाने की स्थिति को व्यक्त करती है, 'एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा' या 'सोने पर सुहागा' जैसी लोकोक्तियाँ यह भी दिखाती हैं कि हमारी भाषा कितनी चित्रात्मक और प्रभावशाली है। कम शब्दों में गहरी बात कहना और उसे इस प्रकार कहना कि उसका प्रभाव लंबे समय तक बना रहे, यह विशेषता लोकोक्तियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। विशेषः लोकोक्तियाँ भाषा को केवल समृद्ध ही नहीं बनातीं, बल्कि समाज के अनुभवों और जीवन की सच्चाइयों को भी पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाती हैं। यही कारण है कि वे आज भी लोकजीवन और संवाद का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई हैं।

इंदौरी ठसक में शहरीकरण और गाँव की दुर्दशा पर तरस आने लगा हैं।

अरे भिया ! यही है नया जमाना

पहले का आलम बताएं क्या?इंदौर में सुबह का असली अलार्म मंदिर की घंटी नहीं, पोहे-जलेबी की खुशबू थी । और जो आदमी सुबह 'सेव' नहीं खाए, समझ लो उसका दिन वैसे ही खराब जाने वाला है जैसे बिना चटनी के समोसा।

पर भिया, अब जमाना इतना बदल गया है कि-- आदमी मंदिर के बाजू से निकलकर पोहे खाते-खाते भी मोबाइल में रील देख रहा है या बना रहा है। सामने बैठा दोस्त क्या बोल रहा है, उससे ज्यादा जरूरी है – 'भिया, स्टोरी डाल दी क्या? '

अब तो गाँव और शहर का फर्क भी बड़ा मजेदार हो गया है। गाँव वाला शहरी बनना चाहता है और शहर वाला 'रूरल एक्सपीरियंस' लेने रिसॉर्ट में जा रहा है।

अरे भिया! पहले गाँव में लोग मिट्टी से जुड़े थे, अब 'मिट्टी फेस पैक' खरीद रहे हैं।

गाँव में आदमी सुबह उठते ही खेत देखता था। अब उठते ही 'नेट चालू है क्या?' देखता है।

मुर्गा बेचारा बेरोजगार हो गया। उसकी बाँग से अब कोई नहीं उठता। मोबाइल की 'टिंग-टिंग' ने उसका रोजगार खा लिया।

इधर शहर का हाल तो और भी भारी है।फ्लैट में आदमी अपने पड़ोसी को नहीं पहचानता, लेकिन उसकी डोरबेल की आवाज़ तक याद रहती है।

लिफ्ट में रोज मिलेंगे, मगर बात ऐसे करेंगे जैसे दोनों सीबीआई की गुप्त जाँच में लगे हों।

'नमस्ते... '

'जी... '

बस खत्म।

इतना सूखा व्यवहार तो इंदौर की गर्मी में भी नहीं मिलता था भिया !पर अब फिख रहा हैं।

पहले गाँव में चार लोग खाट डालकर बैठते थे तो आधा दुःख वहीं हल हो जाता था। अब शहर में आदमी 'मेंटल हेल्थ सेशन' बुक कर रहा है।

अरे भिया ! जिसके पास बात करने वाला दोस्त नहीं, वो अब काउंसलर के पास जाकर पैसे देकर रो रहा है।

और ऊपर से कहेगा – 'आई एम हीलिंग ... '

हीलिंग नहीं भिया, अकेलापन है वो !

पहले बारिश आती थी तो बच्चे कागज की नाव चलाते थे। अब बारिश आते ही लोग मोबाइल बचाते फिरते हैं –

'अरे वाई-फाई बंद हो गया रे ! 'गाँव में पहले मेघ मल्हार गूंजता था। अब शहर में लोग यूट्यूब पर 'रेन साउंड फॉर स्लीप ' सुनकर सोते हैं।

अरे जब असली बारिश हुई थी तब एसी में घुस गए, अब मोबाइल में बारिश ढूंढ रहे हैं !

ये आधुनिकता भी बड़ी गजब चीज है।

पहले घर के आँगन में तुलसी होती थी श्रद्धा से। अब बालकनी में प्लास्टिक का पौधा लगा है सजावट से।

उसे रोज पानी नहीं, सिर्फ 'इंस्टाग्राम लाइक' चाहिए।

इंदौर में तो भिया अब हर आदमी फूड ब्लॉगर बना घूम रहा है।

पोहे सामने आए नहीं कि पहले फोटो –

'रुको-रुको कोई हाथ मत लगाना ! '

इतनी इज्जत तो पहले घर के बुजुर्गों की भी नहीं होती थी जितनी अब जलेबी की फोटो की हो रही है।

उधर गाँव का किसान सोच रहा है कि शहर वाला इतना पढ़-लिखकर भी हर रविवार 'ऑर्गेनिक सब्जी' क्यों ढूंढता है?

अरे भिया, जिसे तुमने छोड़ दिया वही अब शहर वाले पाँच गुना दाम में खरीद रहे हैं।

अब रिश्ते भी बड़े डिजिटल हो गए हैं।

पहले लोग घर पहुँच जाते थे

'काकी चाय बनाओ। '

अब पहले मैसेज आता है

'आर यू एवेलेबल फ़ॉर ए क्विक मीट ? '

जल्दी मिलने का इतना सिस्टम तो डॉक्टर भी नहीं रखते।

और ये शहर की सभ्यता भी कमाल है।

आदमी सामने वाले को देखकर मुस्कुरा देगा, मगर मन में सोचेगा –

'ये यहाँ क्यों आ गया? '

गाँव में आदमी बिना बुलाए आ जाए तो खाना खिलाते थे।

शहर में बिना बताए आ जाओ तो लोग पर्दे के पीछे छुप जाते हैं –

'बोल देना घर पे नहीं हैं। '

भिया, सच कहूँ तो आदमी जितना 'अपडेट' हुआ है, उतना ही अंदर से 'हैंग' हो गया है।

पहले थकान खेत में मिट्टी पर बैठकर उतर जाती थी। अब आदमी स्पा में जाकर भी तनाव लेकर लौटता है।

आज आदमी के पास एसी है, कूलर है, कार है, स्मार्टफोन है...

बस चैन नहीं है।

और मजे की बात सुनो –

शहर वाला गाँव जैसी शांति चाहता है,

और गाँव वाला शहर जैसी भागदौड़।

दोनों लाइन में लगे हैं,

और सुख दोनों के पीछे हँस रहा है।

तो भिया, विकास करो, खूब करो...

मॉल बनाओ, फ्लाईओवर बनाओ, ऊँची बिल्डिंग बनाओ...

पर इतना ध्यान रखना कि कहीं आदमी ही छोटा ना हो जाए।

वरना एक दिन दादी सही बोलेंगी –

'इतना पढ़-लिख गए नाना,पर जीना भूल गए रे ! '

संध्या राजीव पाण्डेय